Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-91-95

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 91-95

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

1. गगनदीप कौर
शोध-छात्रा-हिन्दी विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला.

2. डॉ. सुरिन्द्रपाल कौर
सहायक प्रोफेसर, सैंटर फार डिस्टेंस एण्ड आनलाइन ऐजुकेशन,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला.

Corresponding Author :
गगनदीप कौर
शोध-छात्रा-हिन्दी विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला.

मोहन राकेश की कहानियों में दाम्पत्य-संबंधों में द्वन्द्व

तन-मन से जुड़ा पति-पत्नी का खूबसूरत रिश्ता ही ज़िन्दगी व परिवार को आनंद से भर देता है। सफल दाम्पत्य जीवन खूबसूरत फूलों की सेज के समान है, किन्तु जब कुछ कारणों से पति-पत्नी के बीच वैमनस्य बढ़ने लगता है, तब यह फूल गिरने व मुरझाने लगते हैं। फूलों की जगाह काँटे नज़र आने लगते हैं। फिर उसकी चुभन दाम्पत्य संबंधों को खोखला बनाकर टूटने की कगार पर पहुँचा देती है। भारतीय समाज में विवाह सामाजिक रूप से अनिवार्य तथा धार्मिक दृष्टि से एक पवित्र बंधन माना गया है। किन्तु बदलते समय प्रवाह में आज देखें तो नैतिक मूल्यों की परवाह किये बिना स्त्री-पुरुष मनमाने ढंग से स्वतंत्र जीवन जीने लगे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप वैवाहिक संस्थान की अनिवार्यता को प्रश्नचिन्हों के कटघरे में खड़ा कर दिया गया है। जिस कारण पति-पत्नी के बीच संबंध हीनता और संघर्ष देखने को मिल रहा है। उनके बीच कायिक स्तर पर संबंध के खुश्क पर्दे की झलक है, लेकिन अंदर से सभी संबंध-सूत्र नष्ट हो चुके हैं।

मोहन राकेश ने अपनी कहानियों के माध्यम से सार्थक अनुभवों और पैनी दृष्टि से पति-पत्नी के संबंध विषयक समस्याओं को विशेषरूप से पहचान कर उसे रेखांकित किया हैं। पति-पत्नी के संबंधों को लेकर लिखी गयी कहानियों में उनके संबंधो की विडंबनाओं को अलग-अलग स्तरों पर अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया और इसमें पर्याप्त सफलता भी मिली हैं। मोहन राकेश की अधिकांश कहानियों में पति-पत्नी के संबंधों में आये बिखराव को देखा जा सकता हैं। यह बिखराव व टूटन केवल अशिक्षित ही नहीं बल्कि मध्यवर्गीय शिक्षित दाम्पत्य जीवन में ज्यादा देखने को मिलती हैं। अपना अस्तित्व बनाएं रखने के लिए पति-पत्नी के बीच अहं का टकराव, महत्वाकांक्षा, पत्नी की बदलती व्यावसायिक स्थिति, पति-पत्नी के बीच तीसरे व्यक्ति का आना, संदेह आदि करणों से टकराहट बनी रहती हैं, जो संबंध विच्छेद तक पहुंच जाती है।

मोहन राकेश की कहानी **'एक और जिंदगी'** में पति-पत्नी का अहं और समान व्यक्तित्व पाने की टकराहट ही संबंध विच्छेद का मूल कारण बनती है। कहानी का नायक प्रकाश व नायिका बीना शिक्षा व नौकरी में समान दर्जा रखने वाले प्रेम विवाह करते हैं। शीघ्र ही शादी का यह पवित्र बंधन दोनों के लिए परेशानी का कारण बनता नज़र आता है। बीना आधुनिक स्त्री होने के नाते स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखना चाहती है। पति का स्वयं की जिंदगी में दखल व अधिकार पसंद नहीं करती। दोनों ही अहं की तृष्टि के लिए परेशान व अलग रहते हैं। "ब्याह के कुछ ही महीने बाद से ही पति-पत्नी अलग रहने लगे थे। ब्याह के साथ जो सूत्र जुड़ना चाहिए था, वह जुड़ नहीं सका था। दोनों अलग-अलग जगह काम करते थे और अपना-अपना स्वतंत्रता ताना-बाना बुनकर जी रहे थे। लोकाचार के नाते साल छः महीने में कभी एक बार मिल लिया करते थे।"[1] **डॉ. रघुवीर सिन्हा** के अनुसार "पति स्वभाव से ही और विरासत में प्राप्त संस्कारों के कारण अहम्वादी होता है और जहाँ पत्नी भी अहंवादी हो वहाँ एक दूसरे के अहं आपस में टकराने लगते हैं और निर्वाह मुश्किल हो जाता है।"[2]

वर्तमान समाज में स्त्री-पुरुष की तीव्र गति से बढ़ती बौध्दिकता के साथ-साथ अहंभाव ने भी व्यापक रूप ग्रहण कर लिया है, जो दम्पत्य जीवन को जड़ से खोखला कर रहा हैं। मोहन राकेश की कहानी **'गुंझल'** में ऐसा ही भाव देखने को मिलता है, जिसमें पति-पत्नी का रिश्ता ऊपरी दिखावे से स्वाभाविक व शांत नज़र आता है लेकिन भीतर से अलगाव व उलझन से भरा हुआ है। कहानी की नायिका कुंतल के मन की अनेक इच्छाएं हैं जो अपने पति के साथ रहकर पूर्ण नहीं कर पाती। वह अपने अस्तित्व को दबा-कुचला अनुभव करती है। अपने अहं के कारण पति की कोई भी बात सुनना नहीं चाहती। वह सोचती है कि "क्या उसने कभी सोचा था कि उसे जीवन में अपने ही अंदर के संघर्ष से इस तरह पिसना पड़ेगा? कहाँ युनिवर्सिटी के वे दिन, जीने का वह उत्साह और मन की बड़ी-बड़ी आकांक्षाएं और कहां आज की यह घिसटती छटपटाती जिंदगी। क्या उसके अंतर्द्वन्द्व को उसके अतिरिक्त और कोई भी समझ सकता था?"[3] कुंतल का एकमात्र लक्ष्य है कि वह आजाद होना चाहती है।

आधुनिक युग में टूटते परिवारों का कारण व्यावसायिक व्यस्तता व बढ़ती महत्वाकांक्षा है। बदलते समय व परिस्थितियों ने मनुष्य की इच्छाओं और आवश्यकताओं को बदल दिया हैं, जिससे तनाव, बिखराव, असांमजस्य की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इसके संबंध में **डॉ. सुनीता श्रीमाल** लिखते हैं कि "मोहन राकेश के साहित्य में भी संबंधों में तनाव का बहुत बड़ा कारण पात्रों का महत्तवकांक्षी होना है। महत्वाकांक्षा का दबाव इतना अधिक है कि परिवार में पति-पत्नी का संबंध गौण हो गया है। इसके लिए यदि उन्हें घर भी छोड़ना पड़े तो वे इसके लिए भी तैयार है। वे अपनी इच्छाओं का दमन करना स्वीकार नहीं करते। मुख्यतः मध्यवर्गीय व्यक्ति में महत्वाकांक्षा इतनी अधिक होती है कि वह हमेशा असंतुष्ट रहता है। एक लक्ष्य प्राप्त के बाद दूसरे को पाने की उनकी इच्छा उनमें कुंठित भावनाएँ पैदा करती रहती है।"[4]

'फौलाद का आकाश' कहानी में पति-पत्नी के दाम्पत्य संबंधों में पनपते अलगाव तथा तनाव को प्रतीकात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। कहानी की नायिका मीरा असंमजस्य व तनावपूर्ण की स्थिति में जी रही है। विवाहोपरांत रवि अपनी पत्नी की ओर ध्यान न देकर समाज में अपनी शांन-शौकत व प्रतिष्ठता बनाएं रखने के लिए काम में व्यस्त हो जाता है। उसके लिए पत्नी केवल घर संभालने, खाना बनाने और शारीरिक भूख मिटाने का एक साधन मात्र है। मीरा अपने पति के व्यवहार के बारे में सोचती कहती है कि "जब रवि बोलता है तो उसकी बातों में शब्द कम और आंकड़े ज्यादा होते हैं। आंकड़े, आंकड़े, आंकड़े! क्या बिना आंकड़ों के रवि कोई बात सोच ही नहीं सकता था? मीरा को लगता था कि उससे प्यार

करते वक्त भी वह मन ही मन चुंबनों की गिनती करता रहता होगा.... तभी तो न उसका आवेश एक चरम पर पहुंचकर एकाएक रुक जाता था।"[5] इसी कहानी में हमें पति की संकुचित मानसिकता देखने को मिलती है। रवि अपनी फैक्ट्री की हड़ताल तुड़वाने के लिए तथा अपना कैरियर अधिक उज्ज्वल बनाने के लिए अपनी ही पत्नी को मिनिस्टर राजकृष्ण की वासना का शिकार बनाता है। सिर्फ अपने कैरियर के विषय में सोचने वाला रवि पत्नी की पीड़ा, अकेलापन और घुटन तक भी महसूस नहीं करता। परिणाम स्वरूप मीरा का अपने पति के प्रति विश्वास टूट जाता है।

'आखिरी सामान' कहानी में ऐसी नारी का चित्रण है जिसमें उसका कोई दोष न होते हुए भी विषम स्थितियों और अकेलेपन की पीड़ा को झेलना पड़ता है। ऐसी नारी जिसको समाज में अच्छा स्थान प्राप्त है सभी उसके कार्य, सौंदर्य और रूप के गुण गाते हैं। लेकिन पति महत्वकांक्षी व्यक्ति है। जीवन में उनकी अनेक आशाएँ और अपेक्षाएँ है। अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए मि. भण्डारी अपनी पत्नी बेला भण्डारी को अपने अधिकारी की वासना पूर्ति का साधन बनाना चाहते है, किन्तु बेला भण्डारी एक स्वाभिमानी स्त्री होने के कारण परपुरुष की वासना का साधन बनने के लिए तैयार नहीं है। वह किसी भी कीमत पर अपनी अस्मिता को बेचना नहीं चाहती और यहीं पर उसे अपने दाम्पत्य सम्बन्धों का खोखलापन नजर आने लगता है। पति की घिनौनी सोच का वर्णन इन शब्दों से बयां होता है "जब पति बहाना बनाकर इंस्पेक्टर के साथ बाहर चले गए और पत्नी से कहने लगे कि अतिथि को ठीक से कॉफी पिलाना तथा इंटर्टेन करना पति के चले जाने के बाद अतिथि की तीखी आंखें और तीखी हो गई, वे आंखें उनके शरीर के हर भाग को जैसे उघाड़कर देख रही थी। उन्होंने अपनी साड़ी को अच्छी तरह लपेट लिया। अतिथि की आंखों में खास तरह के डोरे दिखाई देने लगे। बहुत खींचतान करके किसी तरह वे अपने को छुड़ा पाई।... वे सोने के कमरे में चली गई, और अंदर से चिटखनी लगाकर देर तक रोती रहीं। पति का बारह सौ की नौकरी पाने का मंसूबा पूरा नहीं हुआ था। वह सोचतीं कि क्या इसकी वजह वही हैं।"[6]

पति-पत्नी के बीच भिन्न मानसिकता, भिन्न प्रकृति ही टूटन का कारण बनती जा रही है। संबंधों को बनाए रखने के लिए पति पत्नी के बीच अभिरुचियों, स्वभाव आदि में एकता न होना सबसे बड़ी कमज़ोरी है। **'अपरिचित'** कहानी में ऐसी ही मानसिकता का वर्णन किया गया है, जिसमें पति दीशी को क्लब, संगीत, सोसायटी में रहना, पार्टी में जाना, सभी से बातचीत करना अच्छा लगता है। जबकि पत्नी का स्वभाव अंतर्मुखी होता है। वह आदर्श पत्नी बनकर संस्कारों को बनाए रखना चाहती है तथा अपरिचित लोगों के बीच अपने को मिसफिट महसूस करती है। वह कहती है - "मैं बहुत से परिचित लोगों के बीच अपने को अपरिचित, बेगाना और अनमेल अनुभव करती हूँ। मुझे लगता है कि मुझमें ही कुछ कमी है। मैं इतनी बड़ी होकर भी वह कुछ नहीं जान समझ पाई, जो लोग छुटपन में ही सीख जाते हैं। दीशी का कहना है कि में सामाजिक दृष्टि से बिलकुल मिसफिट हूँ।"[7] दीशी अपनी पत्नी की भिन्न प्रकृति से तंग आकर विदेश चला जाता है। दूसरी तरफ दीशी की पत्नी कई बार कुंठित संवेदनाओं को समझने की कोशिश करती है कि उसके साथ ऐसा क्यों होता है। कहानी में नलिनी एक स्थान पर कहती हैं कि "मुझे दीशी से यही शिकायत है कि वह मेरी बात समझ नहीं पाते। मैं कई बार उनके बालों में अपनी उंगलियां उलझाकर उनसे बात करना चाहती हूं, कई बार उनके घुटनों पर सर रखकर मुंदी आँखों से कितना कुछ कहना चाहती हूं। लेकिन उन्हें यह सब अच्छा नहीं लगता। वे कहते है कि यह सब गुड़ियों का खेल है, उनकी पत्नी को जीता जागता इन्सान होना चाहिए। और मैं इन्सान बनने की कोशिश करती हूं, लेकिन नहीं बन पाती, कभी नहीं बन पाती।"[8]

'चौगान' कहानी का हैरी विल्सन सख्त स्वभाव का आदमी है। हैरी के इस स्वभाव के कारण उसकी

पत्नी लिज़ी उसे संबंध विच्छेद कर लेती है। लिज़ी उसके इस स्वभाव को सहन नहीं कर पाती। "लिज़ी ने उसके तीन बच्चों की माँ होकर भी उससे संबंध विच्छेद कर लिया था। उसने कहा था कि वह उसे नहीं चाहती, किसी और को चाहती है.... और इस तरह की ज़िन्दगी ढोना उसके लिए संभव नहीं है। वह स्वभाव का सख्त आदमी था और लिज़ी को उससे काफी शिकायत रहती थी। पहले कुछ साल-लिज़ी सब कुछ सहती हुई भी खामोश रही थी मगर जब वह बोल पड़ी तो ज़िन्दगी को फिर पुरानी सतह पर ले जाना संभव नहीं हुआ।"[9] हैरी का सख्त स्वभाव पति-पत्नी के बीच वैमनस्य पैदा कर देता है, उनके संबंध को इतना कटु बना देता है कि लिजी हैरी से स्वतंत्र हो जाने का निर्णय कर लेती है ।

संबंधों के बदलते हुए मूल्यों के लिए आर्थिक परिवेश बहुत कुछ जिम्मेदार है। आर्थिक दबाव से सामाजिक पारिवारिक सम्बन्धों में जो बदलाव आया है, इससे पति-पत्नी के संबंधों में भी तनाव और कलह दिखायी देता है । 'गुंझल' कहानी के पति-पत्नी चंदन और कुंतल के बीच तनाव का प्रमुख कारण चंदन की बेकारी से उत्पन्न अर्थ का अभाव है। कुंतल की महत्त्वकांक्षाएँ पूरी नहीं होती तो वह चंदन को छोड़कर अकेले रहने का निर्णय कर लेती है। 'खाली' कहानी में तोषी और जुगल के बीच तनाव का प्रमुख कारण भी अर्थ का अभाव और अर्थ का संघर्ष ही हैं। जुगल मौलिक चीजों की पूर्ति के लिए रात-दिन ऑफिस के कागजों के बीच उलझा रहता है, जिसके कारण दोनों के बीच तनाव और खालीपन निरंतर बना रहता है। तोषी जुगल के साथ कभी खुश नहीं रहती, उसके मन में एक प्रकार की चिढ़ बनी रहती है। वह समझ नहीं पा रही थी कि उसे चिढ़ किस चीज़ से है। तोषी को बार-बार लगता है कि, "एक गंध है जो उसे ठीक से सांस लेने नहीं दे रही है। वह गंध हर चीज से आ रही थी। पलंग से, खूंटी पर टंगे कपड़ों से, फर्श से, अपने-आप से। एक बार फिर उसके मन में आया कि अगर वह नहा सकती, तो शायद इस गरमी या गंध से कुछ हद तक छुटकारा मिल जाता।"[10]

मोहन राकेश की **'जंगला'** कहानी में भी दाम्पत्य जीवन का बिखराव और दुराव अंकित किया गया है। इसका प्रमुख कारण आर्थिक अभाव ही है, जिससे परिवार टूटने लगते हैं। इस कहानी में 'बनवारी भगत' और उसकी पली 'फूलकौर' प्रमुख चरित्र है। दोनों पात्र वरसों से परिवार का भार ढ़ोते हुए अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। दोनों में सहयोग की भावना वहुत कम है। फूलकौर गुस्से में आकर बनवारी भगत को 'खाली जबानवाला' और 'प्रेत' भी कहती है। जवाब में भगत भी कड़वी बाते बोलता है। एक स्थान पर बनवारी भगत गुस्से में आकर फूलकौर को कहता भी है। "तेरी हाथ की रोटी खाने से जहर खा लेना ज्यादा अच्छा है... जा रही थी वहाँ मरने! अपना हाथ तक नजर आता नहीं... आने वाले का सिर-मुँह इसे नजर आ जाएगा।"[11]

वैवाहिक संबंधों में तनाव का एक कारण पति-पत्नी के बीच किसी तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति है। **'क्वार्टर'** कहानी के शंकर और राधा के बीच बढ़ते तनाव और दूरी का कारण मिसेज़ शार्म और मिसेज़ लल्ला हैं। राधा अपने घर में मिसेज़ शर्मा की दखल अंदाजी की आदत से परेशान है। अतः "मिसेज़ शर्मा जिस बात से भी शुरुआत करें, राधा को उसे तुरंत दबा देना होता है। उसे लगता है कि उसे ज़बरदस्ती की सहानुभूति दी जा रही है जिसे वह किसी भी तरह झेल नहीं सकती। क्यों यह स्त्री उसे अपनी ज़िन्दगी अपने ढंग से जीने के लिए अकेली नहीं रहने देती? क्यों उसके घर उसके घर के हर कोने में, हर कमरे में, यह अपनी उदारता लिए आ दाखिल होती है? क्यों यह अपने घर की जरूरतों तक सीमित नहीं रखती?"[12] दाम्पत्य जीवन की नीरसता और कटुता के संबंध में स्वयं राकेश ने एक स्थान पर लिखा है, "अधिकांशतः दाम्पत्य जीवन इसलिए निभ जाता है कि दोनों में से एक में एक ही व्यक्तित्व होता है, या दोनों में ही नहीं होता। दोनों का वना हुआ व्यक्तित्व हो और उसमें टकराव हो तो किसी तरह चल नहीं सकता।"[13]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मोहन राकेश की कहानियों में दाम्पत्य संबंधों की विडंबनाओं को अलग-अलग स्तरों पर रेखांकित किया गया है। अधिकांश कहानियों के पात्र अपना-अपना अस्तित्व बनाएं रखने के लिए बिखराव व भटकाव की स्थिति में रहते हैं। पति-पत्नी के बीच अहं का टकराव, महत्वाकांक्षा, पति-पत्नी के मध्य तीसरे व्यक्ति का आ जाना, कुंठा, अलगाव, संदेह, अकेलापन, आर्थिक संघर्ष, संकुचित मानसिकता आदि जो संबंध विच्छेद का कारण बनते हैं, जो दाम्पत्य जीवन के सुख का आनंद नहीं लेने देते। अंत: हम कह सकते हैं कि राकेश की कहानियाँ पति-पत्नी के संबंधों में आये उतार-चढ़ाव को साफ-सुथरे ढंग से स्पष्ट करने में सफल रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां, कहानी- एक और ज़िन्दगी, पृ. 278
2. हिंदी कहानी का समाज शास्त्रीय अध्ययन, डॉ. रघुवीर सिन्हा, पृ. 62
3. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां, कहानी- गुंझल, पृ.386
4. मोहन राकेश का साहित्य संबंधों के विच्छेदन की स्थितियां, डॉ. सुनीता श्रीमाल, पृ. 153
5. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां, कहानी- फौलाद का आकाश, पृ. 116
6. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां, कहानी- आखिरी सामान, पृ. 117
7. मेरी प्रिय कहानियां, कहानी- अपरिचित, पृ. 65
8. वही पृ. 63
9. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां, कहानी- चौगान, पृ. 195
10. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां, कहानी- खाली, पृ. 28
11. मेरी प्रिय कहानियां, कहानी- जंगला, पृ 25
12. मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां, कहानी- क्वार्टर, पृ. 136
13. मोहन राकेश की डायरी, पृ. 145

•